Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Social Science - ISSN : 2279-0241

Continuous Issue-31| May – June 2018

प्रतिभा पलायन - भारतीय समाज पर सामाजिक-आर्थिक असर

Brain Drain: Socio-Economic Impact on Indian Society

Abstract –

प्रतीभा पलायन शब्द से तात्पर्य है किसी देश से बुद्धितजीवी वर्ग जैसे डॉक्टर्स, अथवा किसी वर्ग की विशेष प्रतिभाओं का अन्य देश में बेहतर सुविधा मिलने के कारण प्रस्थान कर जाने से हैं। प्रतीभा पलायन का अर्थ मानव पूंजी रुपी संसाधनो का आंतरराष्ट्रीय हस्तांतरण हैं, जो अपेक्षाकृत उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियोंका विकासशील देशों से विकसीत देशों में प्रवास हैं। भारतीय डायस्पोरा, विश्व में विशिष्ट समुदाय और गतिशील डायस्पोरा हैं। जो 120 से अधिक देशो में फैले हुए हैं। 30 मिलियन भारतीय डायस्पोरा विकसीत देशो में मानव संसाधनो के रुप में काम करते हैं। भारतीय इंजीनियरों व वैज्ञानिकों का यु.एस. में प्रवास, अंतिम 10 वर्षो में करीब 85 प्रतिशत बढ़ा हैं, ऐसा यु.एस की ऊच्च वैज्ञानिक समिति का दावा हैं। हम लोग मूल्यवान रुपयों से मूल्यवान मानव पूंजी उत्पादन करते हैं, वह रुपयें कर दाताओ से जमा होता हैं। किन्तु ट्रजेडी यह हैं कि हम लोग हमारे कुशल मानव संसाधन को विकसीत देशों के विकास के लिए भेज देते हैं। उन्नत अर्थव्यवस्था के लिए मानव पूंजी आपूर्ति में भारत का नाम अग्रेसर हैं। अन्य महत्वपूर्ण मूल देशों के सामने भारत सबसे अधिक संख्या में बद्धिजीवीओ की आपूर्ति करता हैं। भारत में प्रतीभा पलायन वर्तमान सामाजिक-आर्थिक समस्या हैं।

शब्द कुंजी - *प्रतीभा पलायन, मानव पूंजी, मानव संसाधन, भारतीय समाज*

List of Abbreviations -
EU - European Union,
UNDP - United Nations Development Programme
OECD - Organization for Economic Co-operation and Development

1. प्रस्तावना -

प्रतिभा किसी एक ही देश की परिरक्षित निधि नहीं है । प्रत्येक देश के अपने-अपने क्षेत्र के प्रवीण व्यक्ति होते हैं, जैसे वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ, साहित्य अथवा कलाओं के विद्वान, चित्रकार, कलाकार आदि । मुक्त असाधारण प्रतिभा सम्पन्न ऐसे पुरूष और स्त्रियाँ अपनै देश की प्रगति और समृद्धि में योगदान तो देते ही हैं परन्तु अपनी विशिष्टता वाले क्षेत्र में भी उत्कर्षता लाते हैं । यह कोई असामान्य बात नही है कि इन योग्य व्यक्तियों में से कुछ लोगों को अपने ही देश में कोई सन्तोषजनक काम नहीं मिल पाता या किसी न किसी कारण से वे अपने वातावरण से तालमेल नहीं बिठा पाते । ऐसी परिस्थितियों में ये लोग बेहतर काम की खोज के लिए अथवा अधिक भौतिक सुविधाओं के लिए दूसरे देशों में चले जाते हैं । इस निर्गमन अथवा प्रवास को हाल के वर्षो में "प्रतिभा पलायन" की संज्ञा दी गई है । अपने कुशल और प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियों की हानि से विकासशील देश सब से अधिक प्रभावित हुए हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि विकासशील देशों में वेतन और अन्य सुविधाओं के रूप में प्राप्त होने वाले लाभ कम हैं । वैश्विक रूप से 20 बडे देश हैं जीनके 49 प्रतिशत जनसंख्या वैश्विक प्रवासी हैं ,जीसमें 34 प्रतिशत जनसंख्या 10 मूल देश के हैं। मेक्सिको की तरह भारत की बडी मात्रा में जनसंख्या सरहद पार (डायस्पोरा) रहते हैं। भारत में सन 2000 में 8.0 मिलियन थे किन्तु 2017 में 16.6 मिलियन जनसंख्या अन्य देशो में रहते हैं।(IMR-2017)

प्रतीभा पलायन शब्द से तात्पर्य है किसी देश से बुद्धितजीवी वर्ग जैसे डॉक्टर्स, अथवा किसी वर्ग की विशेष प्रतिभाओं का अन्य देश में बेहतर सुविधा मिलने के कारण प्रस्थान कर जाने से हैं। According to Oxford Advanced Learner's dictionary Brain Drain is "The movement of highly skilled and qualified people to a country where they can work in better conditions and earn more money". प्रतीभा पलायन का अर्थ मानव पूंजी रुपी संसाधनो का आंतरराष्ट्रिय हस्तांतरण हैं, जो अपेक्षाकृत उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियोंका विकासशील देशों से विकसीत देशों में प्रवास हैं। प्रतीभा पलायन को "मानव पूंजी उडान" के नाम से भी जानते हैं क्योंकि यह पूंजीगत उडान जैसा हैं, जीसमें वित्तीय पूंजी का व्यापक प्रवास शामिल हैं। आम तौर पर ब्रेन-ड्रैन एक आर्थिक लागत के रूप में माना जाता है, क्योंकि प्रवासियों सरकार या अन्य संगठनों द्वारा प्रायोजित उनके प्रशिक्षण के मूल्य के अंश लेते हैं। यह पूंजीगत उडान के समानांतर है, जो वित्तीय पूंजी के समान गमनागमन को संदर्भित करता है। ब्रेन-ड्रैन अक्सर अपने देश के गंतव्य में प्रवासियों के डी-स्किलिंग के साथ जुडा हुआ है, जबकि उनके उत्प्रवास देश में कुशल व्यक्तियों के पलायन का अनुभव होता है।

ब्रेन-ड्रैन में विभिन्न वैज्ञानिकों, डोक्टरों और टेक्नोलोजिस्ट जो विकासशिल देशों से अमेरीका, यूके, इंग्लैंड, जर्मन आदि जैसे अन्य विकसित देशों में उत्प्रवास होते हैं। अब यह ब्रेन-ड्रैन की घटनाए Converse Effect बनती है, जैसे की जीस देश में आबादी हो रही है उस विशेष देश के लिए मस्तिष्क लाभ बनती हैं। आम तौर पर भारत सहित सभी विकासशील देशों ये ब्रेन-ड्रैन से पीडित हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विकसित देशों ने इस घटना से मस्तिष्क लाभ उठाया है। कम या अधिक, सभी पिछडे देश इस समस्या से पीडित हैं। भारत दुनिया के ऐसे प्रमुख देशों में से एक है, जो वर्तमान समय में इस ब्रेन-ड्रैन समस्या से ग्रस्त है।

यूएनडीपी का अनुमान है कि कम्प्युटर विशेषज्ञों के यु.एस. उत्प्रवास से भारत को 2 अरब डोलर का नुकसान आता है। अपने उच्च अध्ययन के लिए विदेश जाने वाले भारतीय छात्र, भारत की 10 बिलियन अमरीकी डोलर की विदेशी मुद्रा का एक्सचेन्ज कराते हैं। हजारो भारतीय वैज्ञानिकों, डोक्टरों, इंजीनियरों और अन्य योग्य व्यक्तियों ने माइग्रेट किया है और वे अन्य देशों में रह रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हमारे अच्छे दिमागवाले युवा भारत छोडने के लिए प्रयास करते हैं। पासपोर्ट की मांग प्रत्येक साल बढ रही हैं, भले ही भारत में अधिक से अधिक रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। हमारे राष्ट्र की प्रतिभा का निरंतर बढता प्रवाह, भारत सरकार की चिंता का कारण बना हैं क्योंकि वह शिक्षित और करदाता हैं। उच्च वेतन और सुविधाओं के कारण भारतीय युवा विदेश में जा रहे हैं। विकसित देशों के विकासका एक कारण अल्प विकसित देशो के उच्च बौद्धिक प्रवासियों भी हैं। यह " ज्ञान अंतर Knowledge Gap" बढ रहा है और गरीब देश गरीब होते जा रहे हैं और अमीर देशों ज्ञान देशों के रूप में उभर रहे हैं एवं वे दुनिया पर शासन कर रहे हैं। एक अन्य तरीके से वैश्विकरण ने देश के अंदर कुशल लोगों को बनाए रखने में मदद की हैं क्योंकि एक व्यक्ति भारत में घर पर बैठे विदेशी कंपनी के लिए काम कर सकता है। लेकिन वास्तव में वह अपने देश मे हि, एक विदेशी देश के लिए काम कर रहा हैं।

भारतीय डायस्पोरा, विश्व में विशिष्ट समुदाय और गतिशील डायस्पोरा हैं। जो 120 से अधिक देशो में फैले हुए हैं। भारतीय डायस्पोरा की सेटलमेन्ट प्रकृति के आधार पर उसे दो भागो में, पुराने डायस्पोरा और नया डायस्पोरा में विभाजित किया जा सकता हैं। भारतीय पुराने डायस्पोरा में शामिल प्रमुख देश फिजी, मलेशिया, मोरीशस, त्रिनिडाड और टोबैगो, गुयाना और सुरीनाम, और नए डायस्पोरा में सभी विकसित देशों संयुक्त राज्य अमरिका, ब्रिटन, कनाडा, न्युजीलैंड और ओस्ट्रेलिया हैं। इन दोनों के अलावा भारतीयों की एक अच्छी संख्या भी खाडी क्षेत्र में रहते हैं। भारतीय प्रवासी गंतव्य देशों के भौगोलिक वितरण को योग्यता के स्तर से परिभाषित किया गया हैं। उच्च कुशल लोगों के प्रवास का प्रवाह पारंपारिक भारतीय स्थलों जैसे अमेरीका, ब्रिटन, कनाडा और हाल ही में गैर-अंग्रेजी बोलने वाले इयु देशों की ओर उन्मुख हैं। अमरिका में 1700000, ब्रिटन में 120000, सउदी अरेबिया में 1500000, न्युझिलेन्ड में 25000, ईराक में 110 भारतीय डायस्पोरा बसे हुए हैं। 30 मिलियन भारतीय डायस्पोरा विकसीत देशो में मानव संसाधनो के रुप में काम करते हैं। इस लहर मे विश्व अर्थव्यवस्था से भारतीय अर्थव्यवस्था को जोडा गया था। अर्ध-कुशल और अकुशल भारतीय कामदार मुख्य रूप से खाडी सहयोग परिषद के उच्च आय वाले देशों में केन्द्रित हैं। इन प्रवासियों को भी लंबे

समय तक प्रेषित करने के प्रमुख प्रदाताओं के रूप में देखा गया हैं। भारत के मौजूदा प्रवासियों ने भारतीय श्रम उत्प्रवासन का विकास दिखाया, जो कि खाड़ी की ओर अत्यधिक कुशल प्रवाह की उपस्थिति से पुष्टि की गई है। वह पारंपारीक रूप से अर्ध-कुशल और अकुशल भारतीयों के लिए आरक्षित गंतव्य हैं। अमरिका, ब्रिटन, कनाडा, न्युजीलैंड, ओस्ट्रेलिया और यूरोप की ओर उच्च कुशल प्रवाह के बारे में इसी प्रवृत्ति को दर्ज किया गया है जहां अकुशल भारतीय प्रवासियों को अधिक योग्य श्रेणियों के साथ मिलाया जाता हैं। भारतीय इंजीनियरों व वैज्ञानिकों का यु.एस. में प्रवास, अंतिम 10 वर्षो में करीब 85 प्रतिशत बढ़ा हैं, ऐसा यु.एस की ऊच्च वैज्ञानिक समिति का दावा हैं। हम लोग मूल्यवान रुपयों से मूल्यवान मानव पूंजी उत्पादन करते हैं, वह रुपयें कर दाताओ से जमा होता हैं। किन्तु ट्रजेडी यह हैं कि हम लोग हमारे कुशल मानव संसाधन को विकसीत देशों के विकास के लिए भेज देते हैं। उन्नत अर्थव्यवस्था के लिए मानव पूंजी आपूर्ति में भारत का नाम अग्रेसर हैं। अन्य महत्वपूर्ण मूल देशों के सामने भारत सबसे अधिक संख्या में बद्धिजीवीओ की आपूर्ति करता हैं। भारत में प्रतीभा पलायन वर्तमान सामाजिक-आर्थिक समस्या हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में प्रतीभा पलायन के सामाजिक-आर्थिक पहलु पर ध्यान किया है।

उदेश्य - 1. प्रतीभा पलायन की समस्याको जानना ।
2. प्रतीभा पलायन की समस्याके कारणों को जानना ।
3. प्रतीभा पलायन के सामाजिक-आर्थिक पहलु को समजना ।

2. शोध प्रविधि -

ऐतिहासिक पद्धति के जरीए सेकन्डरी डाटा का उपयोग करके अध्ययन करने कि कोशिष कि है। अध्ययन का आधार राष्ट्रिय, आंतरराष्ट्रय रिपोर्ट में दिये गए आंकडो का उपयोग है। सेन्सस, अखबार, पुस्तकें आदि सेकन्डरी स्रोत के आधार है। अध्ययन का प्रथम विभाग में विषयवस्तु, दुसरे विभाग में शोध प्रविधि, तीसरे विभाग में वर्गीकरण एवं विश्लेषण और चौथे विभाग में निष्कर्ष निरूपण किया है।

3.1 भारत में प्रतीभा पलायन की समस्या -

विकासशील और गरीब देशों के लिए, कई क्षेत्रों में प्रशिक्षित विशेषज्ञो के तहत प्रतीभा पलायन एक सीघा नुकसान हैं। दूसरी ओर उन्नत दोशों के लिए शुद्ध लाभ है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के मुताबिक, प्रत्येक वर्ष पिछडे देशो से हजारो विशेषज्ञ अमेरिका, कनाडा, ब्रिटन, जर्मनी आदि उन्नत देशों में पलायन कर रहे है। इन विशेषज्ञो के प्रशिक्षण के तहत विकासशील देशों ने मिलियन रूपये खर्च किए हैं। लेकिन उन्नत देश उनके प्रशिक्षण पर एक भी रूपये का खर्च किए बिना उनकी सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हजारों उच्च प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों, डोक्टरों, इंजीनियरों और अन्य बुद्धिजीवियों ने भारत छोड दिया और विदेशों में जाकर निवास किया। वे आम तौर पर यू.एस.ए. , यू.के. , कनाडा, जर्मनी आदि मे उच्चतर शोध के लिए मौद्रिक लाभ और सुविधाओं की प्राप्ति के लिए जातें हैं। प्रतीभा पलायन के कारण भारत को नुकसान है और अमेरिका को फायदा हैं।

2010 में अनुमानित 11.4 मिलियन प्रवासियों के साथ भारत दुनिया में दूसरा उत्प्रवासन देश था, प्रथम नंबर पर मेक्सिको (11.9 मिलियन) था। पूर्ण रूप से भारत, उन देशों मे से है, जो विदेशी बाजारों में सबसे ज्यादा कुशल श्रमिकों को खो देता हैं। 2000 में भारत पहला देश था जो प्रशिक्षित डॉक्टरों को विदेश भेज रहा था, जो देश के प्रशिक्षित डॉक्टरों कि कुल संख्या में से 57383 (9.9 प्रतिशत) संख्या थी। भारत ओर फिलीपींस सबसे अधिक विदेशी प्रशिक्षित डॉक्टरों ओर नर्सो को खासकर अंग्रेजी बोलने वाले देशों में भेजते हैं। स्वास्थ्य पेशेवरों के उत्प्रवासन का भारत पर नकारात्मक प्रभाव पडता हैं खास करके ग्रामीण क्षेत्रो में अभी भी डॉक्टरों का घनत्व बहुत कम है। भारत में डॉक्टरों का घनत्व 2004 में 0.6 प्रति हजार लोंगो का है, जब कि अमेरिका में 3 और कनाडा मे 2 हैं। अन्य बडे मूल देशों के मुकाबले, भारत में डॉक्टरों की उच्च प्रवासीता दर (8 प्रतिशत) दर्ज की गई जबकि चीनी डॉक्टरों की प्रवासीता दर 1 प्रतिशत हैं। यह कोइ

प्रतिबंध नहीं है, किन्तु निश्चत रूप से भारत एक बडे ओर शक्तिशाली आधुनिक स्वास्थ्य क्षेत्र हैं, जब कि अन्य देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों का प्रवास ओर एक गतिशील शहरी क्षेत्र एवं देश के स्तर पर चिकित्सा संसाधनों का असमान सामाजिक वितरण दोनो एक साथ होना चाहिए।

भारत से उच्चतर अध्ययन के लिए विदेश जाने वाले अधिकांश छात्र वापस नहीं आते हैं। विदेशी देशों के समृद्ध जीवन देखने के बाद वे अपने ही देश में सभी रूचि खो देते हैं। कई भारतीय विभिन्न विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा के अन्य संस्थानों में पढ रहे हैं। उनमें से कुछ काफी आकर्षक और उच्च पदों पर रखा गया हैं। विदेशी देशों में पहने के उच्च स्तर का नेतृत्व करने का एक ओर आकर्षण है क्योंकि तकनीकी विशेषज्ञ और बुद्धिजीवियों वहां विशेष सुविधाएं प्रदान करते हैं। विदेशी देशों में इस बात का लाभ होता है कि एक व्यक्ति को सीखने के दौरान भी वह अपने जीवन के लिए कमाई कर सकता हैं। विदेशी देशों में स्टाईपेन्ड पर्याप्त है। एक मितव्ययी भारतीय छात्र वहां अच्छी तरह रहता है और कुछ बचत करके घर भज सकता हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत में विशाल प्राकृतिक और मानव शक्ति संसाधन है। यदि इन दोंनो संसाधनों को अधिकतम उपयोग में लाया जाए तो सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक प्रगति प्राप्त की जा सकती हैं। ये तकनीकी और अन्य प्रतिभाशाली संसाधनों जीसे हम प्रत्येक वर्ष खोते हैं, जो हमारे प्राकृतिक संसाधनों के विकास में वह बहुत मदद कर सकते हैं। विदेशों मे रहने वाले भारत के इन प्रतिभाशाली पुत्रों को आकर्षत करने के लिए भारत सरकार को तेजी से कदम उठाने चाहिए। ये प्रतिभाशाली विशेषज्ञ दुनिया मे भारत को एक महान शक्तिशाली देश बनाने में निश्चित रूप से मदद कर सकते हैं। इस संबंध में, लोगों को भी इस समस्या को सुलझानेमें भारत सरकार के साथ आगे बढना चाहिए और सहयोग करना चाहिए। छात्रों के माता-पिता को उन्हें विदेश जाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए और यहॉ तक कि अगर वे उच्च वेतन का भुगतान कर रहे हैं तो वहां स्थायित्व नहीं करें। वैज्ञानिक, डॉक्टर और इंजीनियर अपने मातृभूमि के लिए एक कर्तव्य बनता है। अपना देश आपके प्रशिक्षण पर भारी मात्रा में पैसा खर्च कर रहा हैं। इन लोगों को विदेशी राष्ट्रों की सेवा के द्वारा अपने देश को धोखा नहीं करना चाहीए। आज हजारों युवा भारतीय वैज्ञानिक और तकनीशियन हमारे देश के पुन:निर्माण के लिए समर्पित हैं। देश पहले से ही परमाणु संबंधित स्थिति हॉसल कर चुका है और साथ ही एक अंतरिक्ष शक्ति बन गया है। विदेशों मे रहने वाले यदि वे भारत लौट आए तो सभी भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के लिए पर्याप्त अवसर हैं। उन्हें अपने देश के भविष्य की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए और इस पवित्र कार्य में भाग लेने का सम्मान करना चाहिए।

3.2 प्रतीभा पलायन की समस्याके कारणों -

भारत में प्रतीभा पलायन के कई कारण हैं, जिसमें देश और व्यक्ति प्रमुख हैं। देशों के संदर्भ में सामाजिक वातावरण प्रमुख कारण हो सकता है। जीस में

Source Countries में - अवसरों की कमी, राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक अवसाद, स्वास्थ्य जोखिम आदि ।

Host Countries में - समृद्ध अवसर, राजनीतिक स्थिरता और स्वतंत्रता, विकसित अर्थव्यवस्था, बेहतर जीवन शैली आदि ।

व्यक्तिगत कारणों के संदर्भ में, पारिवारिक प्रभाव और व्यक्तिगत वरीयता, तलाश के लिए प्राथमिकता, बेहतर कैरियर की महत्वकांक्षा आदि। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हम भारत में प्रतीभा
पलायन के कारणों की पहचान कर सकते हैं।

Other factors: Many of the social, economic and political factors also lead to migration. Political instability, red-tapeism, poverty, economic depression, political chaos, rising crime, crises and conflicts, corruption, family reasons, economic depression, low educational standards and inadequate infrastructure are some of the factors which create insecurity among the population that makes them leave their place of origin and migrate to better place. The host country, on the other hand, offers rich opportunities, political stability and freedom, a developed economy and better living conditions that attract talent. At the individual level, family influences, personal preferences, career ambitions and other motivating factors can be considered.

(1) भारत में उच्च शिक्षा का सिनेरियो -

2015-16 में भारत मे उच्च शिक्षा के लिए 799 युनिवर्सिटी हैं। 39071 कॉलेज है और एनरोलमेन्ट संख्या 34584781 है जीस मे पुरूष 18594723 और महिला 15990058 हैं। उच्च शिक्षा मे प्रभावशाली वृद्धि ने अद्ययन, संसाधन, संस्थागत गुणवत्ता और मानकों की पर्याप्तता पर कुछ सवाल उठाए है। आज भारतीय श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए 100 प्रतिशत " कट ओफ " बन गया हैं। संस्थाए देश के सर्वश्रेष्ठ छात्रो को पाने की दौड में है, महत्वाकांक्षी युवा जो " तर्क हीन " मांगो को पूरा करने में विफल रहते है। उन्हें प्रतिष्ठित भारतीय विश्वविद्यालयों में किसी भी स्थान पर स्थान प्राप्त करने के अपने सपनो से सेमझौता करना पडता है। इससे उन्हें विदेशों में उच्च शिक्षा के दायरे का पता लगाने पडता है। कई छात्र उच्च शिक्षा के लिए विदेशो में अच्छे विश्वविद्यालयो में प्रवेश करने, अपनी किस्मत आजमाते है क्योंकि कौशल और ज्ञान के संदर्भ में वो अन्य देशों के छात्रो से आगे है। विदेश जाने वाले छात्र लगातार बढ रहे हैं। सबसे पसंदीदा शैक्षिक स्थलों में यू.एस और यू.के. हैं। यू.एस में पढते वैश्विक छात्रों में प्रत्येक छट्ठा छात्र भारतीय है और मूल देशो में दूसरे स्थान पर भारत हैं। (तालिका - 1)

Table- 1 TOP FIVE PLACES OF ORIGIN IN U.S.

RANK	Place of Origin	2014/15	2015/16	% of Total	% Change
	World Total	974,926	1,043,839	100	7.1
1	China	304,040	328,547	31.5	8.1
2	India	132,888	165,918	15.9	24.9
3	Saudi Arabia	59,945	61,287	5.9	2.2
4	South Korea	63,710	61,007	5.8	-4.2
5	Canada	27,240	26,973	2.6	-1.0

Source - INDIA FAST FACTS 2015-2016

यू.एस. मे पढने वाले छात्रो मे भारत एक गतिशिल देश है जो 2014/15 मे 132888 से 2015/16 मे 165918 छात्र संख्या जो 24.9 प्रतिशत बढा है। जीस मे 36 प्रतिशत छात्र इंजिनियरींग और 34.9 प्रतिशत छात्र मेथ्स और कम्प्युटर सायंस मे पढते हैं। सबसे लोकप्रिय विदेशी विश्वविद्यालयो मे कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, न्यूयोर्क विश्वविद्यालय, कोलंबिया विश्वविद्यालय, मिशिगन विश्वविद्यालय, टेक्सास विश्वविद्यालय, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, बोस्टन विश्वविद्यालय, पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, आदि.

यदपि यह युवा छात्रों का मामला हैं, अकादमिक रूप से अच्छी तरह से योग्य लोग उच्च शोध के लिए विदेश जाना पसंद करते हैं क्योंकि उन्हें भारत में अनुसंधान के लिए सर्वश्रेष्ठ मौके, संसाधन
और सुविधा नहीं मिलती ।

(2) विदेशो मे बेहतर अवसर -

काम के बेहतर अवसरों और अच्छा वेतन पैकेज के लिए ज्यादातर छात्र मेजबान देश में रहना पसंद करते है। अच्छा वैश्वक प्रदर्शन प्रप्त करने और उच्च गुणवत्ता वाले जीवन एवं सुविधाओं के लिए शुरू करने के बाद छात्रो को घर वापस आने के लिए अनिच्छुक हो जाते है। वर्तमान समय मे अधिकांश विकसित देशों ने संस्थानो कि तरह कार्य किया है। जब वे अपने देश में अच्छें, प्रतिभशाली और कुशल श्रमिकों को खोजने मे नाकाम रहे, तब वे अन्य देशों के अत्यधिक कुशल और योग्य लोगो को आकर्षित करते हैं। कुशल भारतीय यू.एस. ग्रीन कार्ड और इ.यू. ब्लू कार्ड को ज्यादा पसंद करते है, बदले में भारत की तरह रहने कि सामान्य स्थिति और आकर्षक पैकेज से समझोता करते है। विकसित देशों में, शोधकर्ताओं को अद्ययन जारी रखने के लिए धन और आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए जाते है, जो एक अन्य उदेश्य

हो सकता है जो इन अवसरों से वंचित लोगों को आकर्षित करता है। ज्ञान निर्माण के आंतरराष्ट्रीयकरण और अनुंसंधान एवं विकास गतिविधियों के तेजी से विस्तार से भारत के पेशेवरों और कुशल श्रमिकों के लिए प्राप्त देशों के विविधीकरण को निर्धारित किया गया । वर्तमान में युरोप, इटली, फ्रांस, जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों जैसे नए अंग्रेजी नहीं बोलनेवाले गंतव्यो में प्रवाह बढा है। औस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैंड में जाने वाले कुशल भारतीय प्रवासियों की संख्या भी बढ गई है।

(3) रोजगार -

भारत मे कुशल और अर्धकुशल, नियुक्त और बेरोजगार मानव संसाधन हैं। कम वेतन और अकुशल कामकाजी परिस्थितियां ही पहल करवाता है, अन्य देशो के बेहतर जीवन स्तर और सुविधओको प्राप्त करने के लीए। विकसित, विकासशील और अविकसित देशों के समुहों में वेतन के मामले में बहुत अंतर है। कुशल श्रमिको को अपने श्रम के बदले में सुखदायक वेतन प्राप्त करना है लेकिन उनकी मातृभूमि में काम करने की स्थिति उनकी इच्छाओं को पूरा नहीं करती हैं। इसलिए उच्च मजदूरी और बेहतर रहने की स्थिति के लिए उन श्रमिक दूसरे देश को स्थानांतरित करना पसंद करते हैं।

(4) अनुकूल प्रवास नीतियॉ -

राष्ट्रो के बीच परस्पर आर्थिक निर्भरता बढाना, ज्ञान अर्थव्यवस्था में कुशल श्रम की बढती मांग को ध्यान में रखते हुए यूरोपीय संघ के लिए, युवा, शिक्षित और योग्य मानव शक्ति के मुख्य आपुर्तिकर्ता के रूप में भारत की स्थिति महत्वपूर्ण रही है। भारत अपनी जनसंख्या और अंग्रेजी बोलनेवाली आबादी के कारण, अत्यधिक कुशल श्रमिकों की ज्यादा संख्या के साथ, विकसित दुनिया के श्रमिकों की कमी वाली अर्थव्यवस्थाओं में आपूर्ति के अंतराल को भरने के लिए एक सबसे प्रमुख देश के रूप में उभरा हैं। युरोपिय संघ के जनसंख्या और बुढापे के प्रभावोको ध्यान में रखते हुए आर्थिक उदेश्योकी पूर्ति के लिए, सदस्य देशो के दक्षिण एशिया के अत्यधिक कुशल पेशेवरों और तृतीयक स्तर के अंतर्राष्ट्रय छात्रों को आकर्षित करने के उदेश्य से चयनात्मक आव्रजन नीतियॉ बनाई हैं। श्रम गतिशीलता की सुविधा के लिए, कुछ युरोपीयसंघ के देशों ने भारत के साथ श्रम-गतिशीलता साझेदारी पर हस्ताक्षर किए। प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय के मुताबिक, इस प्रकार के समझौतों पर कई देशों के साथ हस्ताक्षर किए गए है और अन्य के साथ बातचीत चल रही है।

भारत में ब्रेनड्रेन के कई कारण हैं, सबसे पहले बेरोजगारी की समस्या है। यहॉ तक कि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति को नौकरी नहीं मिल सकती। उच्च शोधकार्यो के लिए भारत में सुविधाओं की कमी है। भारत में उच्च नियुक्तियॉ काफी कम हैं। इस प्रकार प्रतिभाशाली विशेषज्ञ विदेशों में नए चराई तलाशना चाहते है।

3.3 भारत में प्रतीभा पलायन के सामाजिक-आर्थिक पहलु -

(1) भारत नए ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में प्रतिभा संग्रह (Brain Reservoir) -

ज्ञान की गहन गतिविधियों में वृद्धि ने विकसित देशों में विज्ञान और इंजीनियरिंग पेशेवरों की बढती मांग को जन्म दिया हैं। इन डोमेन में प्रशिक्षित लोगों के एक महत्वपूर्ण रिजर्व के साथ, भारत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के लिए मानव पूंजी का प्रमुख सप्लायर बन रहा है। भारत अन्य महत्वपूर्ण मूल देशों की तुलना में इन विशेषज्ञों की बडी संख्या भेज रहा है। एक उदाहरण है कि अमेरिकी ग्रेजुएट डिग्री कार्यक्रमों में विज्ञान और इंजीनियरिंग के विदेशी छात्रों में भारत, चीन और दक्षिण कोरिया के है। यू.एस. मे, 2015-16 मे, मूल देशो मे, भारत के 101,850 विदेशी छात्रों की संख्या से दूसरे नंबर पर है और चीन 123,250, साउथ कोरीया 16,613, साउदी अरब 13,210, कनेडा 10,220 संख्या है। 2015-16 मे, यू.एस. के विश्वविद्यालयो में नामांकित विदेशी छात्रो की संख्या 1,043,839 है, जो 7.1 प्रतिशत बढी है। यू.एस. के सभी उच्च शिक्षा छात्रो में 5.2 प्रतिशत आंतरराष्ट्रय छात्र है। यू.एस. में 9/11 एटेक के बाद एफ-1 वीसा स्टेटस सुरक्षा के लिए जरूरी हैं और रोजगार का परवाना बी है। मेजबान देशो में उत्कृष्ठ और उच्चतम कमाई वाले समूहो में भारतीय

प्रवासियों का एक समूह है। जर्मनी भी भारत के इंजीनियरिंग और कम्प्यूटर विज्ञान के विदेशी छात्रों के रूप मे भर्ती कर रहा है। 2014 में जर्मनी में 7 प्रतिशत विदेशी छात्रों की संख्या बढी हैं। 2015 में भारत से 25 प्रतिशत का बढावा हुआ हैं। जर्मनी में Low tuition fees, English-taught master's programs and improved post-study work right + eased pathway to residency for highly skilled foreign students all helping का लाभ हैं।

ओबामा सरकार ने पहले 2010 में और उसके बाद 2016 में एच-1बी वीजा की फ़ीस में भारी बढ़ोतरी की थी। बीते साल जनवरी में इस फ़ीस को 2000 से बढ़ाकर 6000 डॉलर कर दिया गया था। इस पर भारत सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया जताई थी। **भारतीयों का दबदबा** : अमेरिका उच्च कौशल प्राप्त कर्मियों को अपने यहां काम करने का मौका देने के लिए सालाना 85 हजार एच-1बी वीजा जारी करता है। यह पूरी दुनिया के लिए होता है, लेकिन इसमें भारतीयों का दबदबा है। इसका 60 प्रतिशत से अधिक भारतीयों को मिलता है। इसका कारण उनकी कुशलता और अपेक्षाकृत कम वेतन पर काम करना है। 2015 यूएसआईसीए रिपोर्ट के मुताबिक कंप्यूटर क्षेत्र 86.5 फीसदी भारतीयों को, 5.1 फीसदी चीनी नागरिकों को 0.8 फीसदी कनाडा निवासियों को, 7.6 फीसदी अन्य देशों के नागरिकों को एच 1 बी वीजा मिलता है, वहीं अगर इंजीनियरिंग क्षेत्र की बात करें तो यहां 46.5 फीसदी भारतीय, 19.3 फीसदी चीनी, 3.4 फीसदी कनाडाई, 30.8 फीसदी अन्य एच 1 बी वीजा मिला है। एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में इंफोसिस के कुल कर्मचारियों में 60 फीसदी से ज्यादा एच 1बी वीजा धारक हैं। इसके अलावा वाशिंगटन और न्यूयॉर्क में एच-1बी वीजा धारकों में करीब 70 प्रतिशत भारतीय हैं। आंकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि यदि अमेरिका में एच-1बी वीजा दिए जाने के नियमों में कोई बदलाव किया गया तो इससे सबसे ज्यादा भारतीय इंजीनियर और भारतीय कंपनियां प्रभावित होंगी। साथ ही इसका बुरा प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ेगा। भारतीय जीडीपी में भारतीय आईटी कंपनियों का योगदान 9.5 प्रतिशत के करीब है और इन कंपनियों पर पड़ने वाला कोई भी फर्क सीधे तौर पर अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा। क्या बदला नए कानून के बाद- **घटी भारतीय छात्रों की संख्या** : घृणा अपराधों की विभिन्न घटनाओं और ट्रंप प्रशासन की वीजा नीतियों में संभावित बदलावों को लेकर फैले डर और चिंता के चलते अमेरिकी विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों के आवेदनों की संख्या में तेज कमी देखी गई है। इसका सबसे बड़ा असर भारतीय आईटी कंपनियों पर पड़ेगा। कैलिफोर्निया के सांसद जोए लोफग्रेन ने 'हाई स्किल्ड इंटिग्रिटी एंड फेयरनेस एक्ट 2017' (उच्च कुशल निष्ठा एवं निष्पक्षता अधिनियम 2017) विधेयक पेश किया। इस विधेयक के मुताबिक एच-1बी वीजा पर बुलाए जाने वाले पेशेवर को 1.30 लाख डॉलर से अधिक के वेतन पर ही नियुक्त किया जाएगा। वर्तमान में ऐसे वीजाधारक के न्यूनतम वेतन की सीमा 60 हजार डॉलर है।

युरोपीय संघ में , यूके उच्च कुशल भारतीय प्रवासीयों का पहला गंतव्य है, जो पश्चिमी युरोप में भारतीयों की कुल संख्या का दो तिहाई हिस्सा लेता हैं।

(2) भारतीय छात्रो : विकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए श्रम का एक महत्वपूर्ण स्रोत -

भारतीय छात्रो ने अच्छी तरह प्रशिक्षित भारतीय प्रवासियों के प्रवाह में एक महत्वपूर्ण स्थान ले लिया है। अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय स्टूडेंट्स रजिस्ट्रेशन में भारत और चीन के छात्रों की हिस्सेदारी 47 प्रतिशत की है। अमेरिका में पढ़ने वाले भारतीय और चीनी छात्रों की संख्या लगभग पांच लाख है। यू.एस. में अंतिम दशक में भारी भदलाव आयें है, Sending Countries में परिवर्तन देखा जाता है। तालिका - 2 में आंतरराष्ट्रिय छात्रों की यू.एस की ओर गतिशीलता दर्शाइ है। भारतीय छात्रो ने भरी 2006 से 2015 की उडान को दर्शाती है, जो यू.एस के लिए श्रम का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

तालिका - 2 आंतरराष्ट्रिय छात्रों की यू.एस की ओर गतिशीलता

Place of Origin	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015
World Total	**564,766**	**582,984**	**623,805**	**671,616**	**690,923**	**723,277**	**764,495**	**819,644**	**886,052**	**974,926**
China	62,582	67,723	81,127	98,235	127,628	157,558	194,029	235,597	274,439	304,040
India	76,503	83,833	94,563	103,260	104,897	103,895	100,270	96,754	102,673	132,888
South korea	59,022	62,392	69,124	75,065	72,153	73,351	72,295	70,627	68,047	63,710

Source - 2016 ITA Education Top Markets Report Page No. 6

2009 में, चीन देश-विदेशों मे छात्रों की सबसे बडी संख्या (421,100) भेजता था और भारत दूसरे नंबर पर 153,300 छात्रों विदेशों में भेजे थे। यूरोपीय संघ-27 ने तृतीयक शिक्षा में 16 मिलियन विदेशी छात्रों की मेजबानी की जीसमें 1353930 भारतीय नागरिक थे। पहला गंतव्य ब्रिटेन (42406) था, उसके बाद जर्मनी (3629), साइप्रस (1588) और फ्रांस (1252) था। 2014 मे भारत के छात्रों ने उच्च अभ्यास में प्रमुख 7 देशों मे नामांकन किया जिसमें यू.एस(132888), कनाडा (37399), ओस्ट्रीया(26433), यू.के. (21000), चीन(13578) और जर्मनी(9495) था।

(3) अनुकुल नीतियों के कारण यूरोपीय संघ में भारतीय प्रवासियों के आव्रजन में वृद्धि -

उच्च कुशल व्यक्तियों के लिए अधिक अनुकूल आव्रजन स्थितियों का निर्धारण यूरोप में भारतीय आव्रजन प्रवाह में मजबूत उपस्थिति ही निर्धारित करता है। यूरोप में वर्तमान भारतीय गतिशीलता मुख्य रूप से आईटी, चिकित्सा, वित्त, शिक्षा और अन्य क्षेत्रो में छात्रों और कुशल श्रमिकों का एक गमनागमन है। रोजगार और शिक्षा के उच्च कुशलों की प्रबलता का पता यूरोपिय देशों द्वारा भारतीय नागरिको को दी जाने वाली उच्च स्तर की निवास परमिट से पता चलता है। यूरोपिय संघ ने 201,398 भारतीय नीगरिकों को नये परमिट जारी किए गए जीसमें से 37 प्रतिशत रोजगार के लिए थे और 26 प्रतिशत शिक्षा के उदेश्य के लिए थी। 2008 के मुकाबले 2009 में इमिग्रेशन के प्रवाह मे 21 प्रतिशत की कमी आई थी। भारतीय आव्रजन में 16 प्रतिशत की बढोतरी हुई जो 108,341 तक पहुंच गई, जो सभी गैर-यूरोपीय संघ के नीगरिकों के 6 प्रतिशत के करिब है। हाल ही के वर्षो में भारत-यूरोपीय संघ प्रवासन प्रवृत्ति, न केवल एक क्रमिक विस्तार को दर्शाता है, बल्कि प्रवाह और उनके गंतव्यों के स्रोत के संदर्भ में परिवर्तन भी हैं। यूरोप में भारतीय प्रवासन अकुशल और कुशल प्रवासियों का एक वर्तमान कार्य है, जो कुशल पेशेवरों के बढते तत्त्वों के साथ है जो यूरोपीय संघ के आव्रजन नीतियों के कारण कुशल प्रवासियों पर ध्यान केन्द्रत है।

(4) यूरोपीय संघ के लिए भारत, यूवा ओर उच्च प्रशिक्षित श्रमिकों का आपूर्ति कर्ता देश है -

ज्ञान अर्थव्यवस्था में कुशल श्रम की बढती मांग को देखते हुए, यूरोपीय संघ के लिए भारत, यूवा ओर उच्च प्रशिक्षित श्रमिकों का आपूर्ति कर्ता देश है। अपने जनसांख्यिकीय प्रोफाइल और इसकी अंग्रेजी बोलने वाली आबादी के कारण, भारत उच्च कुशल श्रमिकों के अपने संग्रह के साथ, विकसित दुनिया के श्रमिकों की कमी वाली अर्थव्यवस्थाओ में आपूर्ति के अंतराल को भरने के लिए एक सबसे प्रमुख देश के रूप में उभरा है। अमेरिकी ग्रीन कार्ड के सिद्धांतो के

अनुगामी, यूरोपीय ब्लू कार्ड के माध्यम से, यूरोपीय संघ का इरादा अगले 20 वर्षो में 20 मिलियन उच्च प्रशिक्षित श्रमिकों को आकर्षित करने का है। इसके अलावा यूरोपीय संघ और भारत के बीच 2007 में मुक्त व्यापार समझौते के जरीए उच्च कुशल भारतीयों को यूरोपीय संघ के लिए आव्रजन करने में सरलता रहेगी। भारत 1.25 बिलियन की एक बडी और बढ़ती आबादी के साथ अंतर्राष्ट्रीय प्रवास में एक प्रमुख खिलाडी होगा।

(5) प्रतिभा पलायन विरूद्ध प्रतिभा लाभ -

माइग्रेशन कि जागरूकता बढती जा रही हैं, वह Sending Country ओर Receiving Country दोनों को लाभान्वित कर सकता है। भारत के बारे में सोचे तो लंबे समय में ब्रेन-ड्रैन को ब्रेन-गेप में बदला जा सकता है। वर्तमान समय में विदेशो में भारतीय समुदाय की भूमिका केवल वित्तीय संसाधनों से गृहभूमि के विकास से संबंधित है। अनुमानित 189 देशों में बसे 30 मिलियन भारतीय डायस्पोरा लगभग 400 अरब डॉलर की वार्षिक आर्थिक आय का उत्पादन करता है, जो भारत का जीडीपी 27 का लगभग 30 प्रतिशत है। संयुक्त राज्य अमेरीका में 1 मिलियन भारतीय जो भारत की आबादी के केवल 0.1 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह भारत की राष्ट्रीय आय के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर कमाते है। (रवीश,2013) अनुमानित है की 2010 में जो रेमिटन्स प्राप्त हुए, वह जीडीपी के हिस्से के रूप में 55 अरब डोलर या 3.9 प्रतिशत था। स्वाभाविक रूप से इन वित्तीय संसाधनो ने भारत में विकास प्रक्रियाओं में योगदान दिया। विदेश में बसे भारतीय विदेशियों, विशेष रूप से उच्च योग्यता वाले प्रवासी जो प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ के अलावा अन्य लाभ ले सकते हैं, जैसे देश कि छबि सुधारना, व्यापार नेटवर्क और नए बाजारों तक पहुंच बढाना, ज्ञान हस्तांतरण करना आदि है।

4. निष्कर्ष -

प्रतियोगिता के इस आलम में लोग मूल्यों से ज्यादा तरजीह भौतिकता को दे रहे है। लोगों की मानसिकता में आए इस बदलाव के कारण हमारे सामाजिक व जीवन मूल्यों में भी रेखांकित करने योग्य बदलाव आ रहा है जिस कारण समाज में गमनागमन भी बढ़ रहा है। दूर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि समाज में केवल अंधा अनुकरण बढ़ रहा है। विश्व में शक्ति के संतुलन और अस्थिर विकास के लिए प्रतिभा पलायन की घटना को रोकना बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक विशेष देश को अपने विकास और प्रसार के लिए अपने सभी स्थानीय कुशल नागरिकों का उपयोग करने में मदद करेगा। लेकिन अपने निवासी स्थानो पर इन कुशल श्रमिकों को पकड रखने के लिये, उन्हें पर्याप्त कार्य अवसर और रहने की सुविधा प्रदान करना भी महत्वपूर्ण है। ताकि इस पृथ्वी के प्रत्येक इन्सान के जीवन के अच्छे स्तर हो सकते हैं और प्रत्येक देश एक विकसित राष्ट्र के रूप में खुद को पेश कर सकता है। यूएनडीपी का अनुमान है कि यू.एस. को कम्प्युटर विशेषज्ञों के उत्प्रवास की वजह से भारत को 2 अरब डॉलर का नुकसान आता है। एक सवाल उठता है की क्या हमें कोई किसी भी प्रकार का नुकसान देंगे तो हमें अच्छा लगता है ? नहीं.....न....। क्या देश का नुकसान अपना नहीं होता ? अपने उच्च अध्ययन के लिये विदेश जाने वाले भारतीय छात्र भारत के 10 बिलियन अमेरीकी डॉलर विदेशी मुद्रा का वार्षिक विनिमय करतें है। ये आंकडे स्पष्ट रूप से भारत देशकी शान बढा ने के लिये हैं। सरकार कोई बेन लगाए ऐसी केई उमिद नहीं है मगर हमारा कर्तव्य जरूर है। इस सिनेरियो को भारत के सतत विकास के लिए बदलना जरूरी हैं। प्रतिभा ही देश का विकास है, हमारा विकास हैं।

सुझाव -

भारत में शक्ति के संतुलन और अस्थिर विकास के लिए प्रतिभा पलायन की घटना को रोकना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि देश के कर मे आर्थिक नुकसान, भावि उद्योग साहसिकों और गतिशीलता पर असर, उच्च कोशल श्रमिको की कमी, शैक्षिक कुशल व्यक्तियों की कमी, शिक्षा सर्विस का नुकसान, नए विचार और ईनोवेशन की कमी .... इस प्रकार नुकसान ज्यादा है। इसलिए सरकार को प्रतिभा पलायन के रेशियों को कम करना पडोगा। इलके लिए सरकार को विदेशों की तरह पैकेज और सुविधाए बढाना आवश्यक है, उच्च शिक्षा पद्धतियों मे बदलाव भी जरूरी है, देश के युवाओं के लिए ज्यादा से ज्यादा सुनहरे अवसरों का सर्जन करना बहुत महत्वपूर्ण है। इन सबके लिए देश को प्रतिभा की जरूरत हैं।

संदर्भ सूची

I. जानी बलवंत (2014)ब्रिटिश गुजराती डायस्पोरा निबंध धारा, पार्श्व पब्लिकेशन,अहमदावाद

II. शेठ प्रवीण (2008)भारतीय डायस्पोरा, अर्थात, सी.एस.एस.,ग्रंथ-27,अंक-1,2,पे.64-71, सुरत

III. Chaudharu Bhasksr (2012) Mobility and Brain Drain in Higher Education in India, International
IV. Journal of Social Science & Inter Disciplinary Research, vol-1, Issue 12.

V. Gribble Cate &Tran Ly (2016) International Trends in Learning Abroad, IEAA, Uni. Australia

VI. EUROSTAT International Migration Database.

VII. Iravani Mohammad (2011)Brain Drain Problem : A Review, International Journal of Business &
VIII. Social Science, Vol.2, No.15, p.p.284-289, 2011.

IX. International Migration Report 2017, United Nations.

X. India Fast Fects-2015/16, open doors Report.

XI. ITA Education Top Markets Report,2016, U.S. Department of Commerce.

XII. Jayaram (2004) The Indian Diaspora: Dynamics and Migration, Indian Sociological Society, Sage
XIII. Publication India Pvt.Ltd., New Delhi.

XIV. Khadria Binod (2002) Skilled Labor Migration From Developing Countries :Study on India, International Migration Programme, Geneva.

XV. Kim Knott & Sean McLoughlin (Edt.)(2011) Diasporas, Rawat Publication, Jaipur

XVI. Madhurima Nundy (2016) Indian Students in Higher Education Abroad : The Case of Medical
XVII. Education in China, Institute of Chinese studies, No.40, Delhi.

XVIII. OECD Statistics – International Migration database.

XIX. Raveesh (2013) Brain Drain : Socio-Economic Impact on Indian Society, International Journal of
XX. Humanities & Social Science Invention,Volume-2,Issue-5,p.p. 12-17.

XXI. Soni Jeetendra (2006) Brain Drain to Brain Circulation: In Indian Context, JNU, New Delhi.

XXII. Varma Roli & Kapur Deepak (2013)Comparative Analysis of Brain Drain, Brain Circulation and
XXIII. Brain Retain : A Case Study of Indian Institutes of technology, Journal of Comparative Policy
XXIV. Analysis,Vol-15,No.4,p.p. 315-330.

XXV. Vipan Kumar & Oth. (2014) Analysis of Indian's Manpower Resource With respect to Migration
XXVI. Aspect of Resources and Comparative Capabilities, CSIR-NISTADS, New Delhi.

XXVII. http:// stats.uis.unesco.org

XXVIII. http:// indiandiaspora.nic.in

XXIX. www.trade.gov/topmorkets.

****

Dr. Hasmukh Panchal
Assistant Professor
Sociology
Department of Sociology & Social Anthropology
Gujarat Vidyapith

Copyright © 2012 – 2018 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat